ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 234-235

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

शैक्षिक विकास : समाज की मूलभूत आवश्यकता के संदर्भ में

छाया वर्मा

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0) भारत

Received-29.02.2023, Revised-05.03.2023, Accepted-10.03.2023 E-mail: chhayaverma28008@gmail.com

सारांशः ***मनुष्य की अनेक आवश्यकताएं होती हैं। जिनमें कुछ अनिवार्य होती हैं, जैसे– रोटी, कपड़ा और मकान, जबकि कुछ इतना अनिवार्य नहीं होती। इनकी पूर्ति मनुष्य केवल अपनी विलासिता के लिए करता है, जैसे– मनोरंजन, प्रौद्योगिकी आदि। इनमें से एक आवश्यकता है – शिक्षा का विकास, जो एक गौड़ आवश्यकता से अनिवार्य आवश्यकता बनती जा रही है, क्योंकि जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है, जहां शिक्षा की आवश्यकता ना हो। अतः वर्तमान समय में शैक्षिक विकास की अवधारणा एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में देखी जा रही है।***

मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी गई है, लेकिन अगर देखा जाए तो वस्तुतः जन्म के समय वह अन्य जीव–जंतुओं की भांति एक जैविक प्राणी ही होता है। सामाजिक प्राणी तो वह समाज के संपर्क में आकर जब कुछ सीखता है तब बनता है। जिसे समाजशास्त्रीय भाषा में समाजीकरण की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह कुछ सीखना ही उसकी शिक्षा की शुरुआत होती है। हालांकि औपचारिक रूप से विद्यालय जाकर शिक्षक/शिक्षिका से विधिवत शिक्षा ग्रहण करने को ही शिक्षा माना जाता है। प्राचीन काल की शिक्षण प्रक्रिया पर नजर डालने से ज्ञात होता है कि औपचारिक रूप से शिक्षा की शुरुआत करने की एक विधिवत प्रक्रिया होती थी, जिसे पूर्ण करने के पश्चात् ही बच्चें के शैक्षिक जीवन की शुरुआत होती थी। यद्यपि समय के साथ–साथ उस प्रक्रिया में बदलाव आता गया है, किंतु शिक्षा की आवश्यकता कहीं से भी कम नहीं हुई है, अपितु समाज की जटिलता बढ़ने के साथ बढ़ती ही जा रही है।

कुंजीभूत शब्द– जैविक प्राणी, सामाजिक प्राणी, समाजशास्त्रीय, समाजीकरण, औपचारिक रूप, विधिवत शिक्षा, संकुचित।

शिक्षा का अर्थ– "शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। जिसका अर्थ है– सीखना और सिखाना। अतः 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने और सिखाने की क्रिया।"

जब हम शिक्षा शब्द का प्रयोग करते हैं, तो सामान्यता इसके दो रूप देखने को मिलते हैं, व्यापक रूप में एवं संकुचित रूप में।

"व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण–प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन–प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना–सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना–सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।"(विकीपीडिया)

समाज की मूलभूत आवश्यकताएं और शैक्षिक विकास– जिस प्रकार से रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है जिससे मनुष्य का विकास संभव होता है। उसी प्रकार समाज के विकास के लिए भी कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती है जिससे उस समाज विशेष का सर्वांगीण विकास हो सके। चूंकि मनुष्य समाज का ही एक अंग है। अतः उसकी आवश्यकताएं समाज की आवश्यकताएं मानी जाती है और उसमें होने वाले विकास को सामाजिक विकास तथा विघटन को सामाजिक विघटन मान लिया जाता है। यूं तो देखा जाए तो किसी समाज के विकास के लिए अनेक पहलुओं जैसे– आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि का विकसित होना आवश्यक है, किंतु इसमें जो सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, वह है – शिक्षा का विकास।

वैसे तो सर्वांगीण विकास के लिए समाज के सभी पहलू अपनी – अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं किंतु शैक्षिक विकास इन सब में सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति अपने संपूर्ण अधिकारों और कर्तव्यों को जानकर उनका समुचित प्रयोग कर सकता है। इस तथ्य को निम्नलिखित विश्लेषण के माध्यम से समझा जा सकता है–

शिक्षा और आर्थिक विकास – सरकार द्वारा समय–समय पर अनेक योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जाते रहते हैं। एक पढ़ा–लिखा नागरिक इन योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर उनका समुचित लाभ प्राप्त कर पाता है। हम अक्सर देखते हैं कि जानकारी के अभाव में योजनाओं का अधिकांश भाग बिचौलिए हड़प चाहते हैं फलस्वरुप सरकार का उद्देश्य अध

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

जाता है। अगर नागरिक शिक्षित और समझदार हो तो इस स्थिति से बचा जा सकता है। इसके अलावा एक शिक्षित व्यक्ति अपने व्यवसाय में नई–नई प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर अपने और अपने समाज के आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है। भारत को गांवों का देश कहा जाता है जहां ज्यादातर जनसंख्या कृषि पर निर्भर होती है। समुचित जानकारी और प्रशिक्षण के अभाव में कृषि अधिकांश किसानों के लिए घाटे का सौदा बनी हुई है। किसानों की शैक्षिक योग्यता को बढ़ाकर उन्हें कृषि की अत्याधुनिक तकनीकों से अवगत कराया जा सकता है जिससे वह कृषि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास कर सके। हमारे आसपास ऐसे कई उदाहरण देखने को मिल जाएंगे जिसमें पढ़े–लिखे किसानों ने कृषि की उन्नत विधियों को अपनाकर कृषि को घाटे से फायदे का सौदा बना दिया है।

शिक्षा और सामाजिक विकास– शिक्षा और सामाजिक विकास परस्पर अंतर्संबंधित हैं। जिस समाज की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी उसका वैसा ही सामाजिक विकास होगा। सामाजिक कुरीतियां एवं भारतीय समाज में आलोक कुमार लिखते हैं – "शिक्षा का उद्देश्य समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का विकास करना होना चाहिए, जो जातिवाद, वंश परंपरा, अस्पृश्यता, ऊंच–नीच की भावना, स्त्रियों का समाज में हीन स्थान एवं उनके साथ दुर्व्यवहार, उन्नत एवं पिछड़ें वर्ग की बढ़ती खाई, सामाजिक मूल्यों का ह्रास, परिवार का विघटित स्वरुप तथा दहेज प्रथा आदि का समाधान कर सके।"

उपरोक्त कथन के परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो पाते हैं कि आज भी हमारे समाज में अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव, छुआछूत, सांप्रदायिकता आदि व्यापक स्तर पर विद्यमान है। इन सब का समुचित समाधान शिक्षा के समुचित विकास में ही नजर आता है। एक शिक्षित व्यक्ति इन सब बुराइयों के हॉनिकारक परिणामों पर निष्पक्ष होकर विचार कर सकता है और उनका डटकर प्रतिरोध भी कर सकता है। उदाहरण के तौर पर राजा राममोहन राय। यह शिक्षा का ही असर था कि वो सती प्रथा जैसी अमानवीय प्रथा को बंद करवा पाए। कहने का मतलब यह है कि हमारे समाज में शिक्षा का स्तर जितना उन्नत होगा हमारा सामाजिक विकास भी उतना ही बेहतर होगा।

शिक्षा और सामाजिक मूल्य– किसी समाज की शिक्षा प्रणाली से ही उसके सामाजिक मूल्यों का निर्माण होता है और उस समाज के सामाजिक मूल्य ही उस समाज का प्रतिबिंब होते हैं। जैसे प्राचीन काल में शिक्षा धर्म से जुड़ी हुई थी। फलतः नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च था, किंतु आज के समय में भौतिकता को ही सब कुछ मान लिया गया है, जिसके दुष्परिणाम आए दिन सामने आते रहते हैं। अतः हमें सचेत होने की आवश्यकता है। जिससे शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिकता और अर्थ संचय ना रह जाए, बल्कि समुचित सामाजिक मूल्यों का विकास भी हो सके।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो रहा है कि शैक्षिक विकास समाज की एक मूलभूत आवश्यकता बन गया है। सामाजिक जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नजर नहीं आता है जहां शिक्षा की उपयोगिता स्वयंसिद्ध ना हो। हालांकि बिना शिक्षा के हम जीवन को खत्म नहीं मान सकते लेकिन संतोषजनक भी नहीं कह सकते। यह शिक्षा का ही असर है कि आज हम आदिम जीवन से चांद पर पहुंच चुके हैं और अन्य क्षेत्रों में भी काफी आगे बढ़ चुके हैं। बिना शैक्षिक विकास के इतनी प्रगति करना संभव नहीं था। जीवन के हर क्षेत्र का विकास चाहे वह नैतिक हो, आर्थिक हो या सामाजिक। सब शैक्षिक विकास से जुड़े हुए हैं। अतः स्पष्ट है कि मानव जीवन की अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की भांति शैक्षिक विकास भी एक मूलभूत आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सन्दर्भ – विकीपीडिया।
2. कुमार, आलोक, सामाजिक कुरीतियां एवं समाज (2011) इशिका पब्लिशिंग हाउस जयपुर, भारत।

*****